IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

श्री गंगानगर व हनुमानगढ जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण–अभिवृत्ति एवं व्यावसायिक मूल्यों का अध्ययन

डॉ. वंदना दुआ

शोध निर्देशिका, शिक्षा विभाग,

टॉटिया विश्वविद्यालय, श्री गंगानगर (राज.)

सीमा रानी

शोधार्थी, शिक्षा विभाग,

टॉटिया विश्वविद्यालय, श्री गंगानगर (राज.)

सारांष –

राजकीय एवं निजी स्तर पर संचालित उच्च माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की शिक्षण संबंधी अभिक्षमताओं, व्यावसायिक मूल्यों के अभ्यास का अवसर प्राप्त होता है। सरकार इन संस्थाओं के उचित विकास की अनेक योजनाएं बना रही है, ताकि स्तर में गुणवत्ता लायी जा सके। विकास की अनेक योजनाओं को लागू कर उनके स्तर में उचित गुणवत्ता लायी जा सकेगी। राजकीय व निजी स्तर पर संचालित विद्यालयों के अध्यापकों की शिक्षण संबंधी अभिक्षमताओं, व्यावसायिक मूल्यों में वृद्धि से नवीन ज्ञान को सीखने में मदद मिलेगी, जिससे नए ज्ञान के प्रयोग से विद्यालयों में शिक्षण संबन्धी व प्रशासनिक कार्य करने में आसानी हो सकेगी। विद्यालय का भौतिक व अकादमिक वातावरण वहां कार्य कर रहे शिक्षकों की मानसिकता, शिक्षण संबंधी अभिक्षमताओं, व्यावसायिक मूल्यों पर निर्भर करता है। इस अध्ययन के माध्यम से प्राप्त होने वाले सुझावों से इस स्थिति में सुधार होगा, जिसका प्रत्यक्षत् लाभ इनमें कार्य करने वाले शिक्षकों को मिल सकेगा। बालकों को गृह कार्य पूर्ण करवाने, नवीन जानकारी देने में अभिभावकों की अहम भूमिका होती है। अतः यह अध्ययन अध्यापकों के अलावा अभिभावकों में भी अध्ययन आदतें विकसित करने में सहयोग कर सकेगा। इस अध्ययन से उनके सामाजिक व शैक्षिक उन्नयन का मार्ग प्रशस्त होगा, जिससे वे समाज में अपना स्तर कायम रखने में सफल होंगे तथा अपनी निर्बलता दूर करेंगे। इस अध्ययन के माध्यम से राज्य तथा केन्द्रीय सरकार को उनके द्वारा चलाई जा रही उत्थान योजनाओं के परिलाभों की जानकारी प्राप्त होगी और प्रत्येक अध्यापक इसके प्रति रुचि ले सकेगा।

शब्द संकेत – शिक्षक, शिक्षण–अभिवृत्ति, व्यावसायिक मूल्य।

1.1 प्रस्तावना

आधुनिक जगत में ज्ञान, तकनीकी एवं सूचना क्रान्ति के विकास के साथ–साथ सामाजिक मूल्यों एवं मान्यताओं में भारी फेर बदल हुआ है, जो मनोसामाजिक समस्याओं से घिरा हुआ है। ऐसे में शिक्षा, शिक्षक व शिक्षार्थी जगत भी इससे अछूता नहीं रहा है। प्राचीनकाल में भारतीय सभ्यता व विश्व की अनेक सभ्यताएं धार्मिक प्रवृति से सलिप्त थीं, जिसमें धर्म को आधार मानकर शिक्षा दी जाती थी। मनुष्य मात्र का सम्पूर्ण जीवन सांस्कृतिक चेतना एवं धार्मिक सहिष्णुता होता था। इसके साथ–साथ आर्थिक, राजनैतिक, सामाजिक, शैक्षिक ढ़ाचे धार्मिक विचारधाराओं से सिंचित थे। जीवन का उद्देश्य मोक्ष प्राप्ति था।

अतः उस समय शिक्षक की भूमिका ईश्वर के रूप में थी। शिक्षक मोक्ष मार्ग का दाता था तथा शिक्षा मोक्ष प्राप्ति का मार्ग थी। प्राचीनकालीन शिक्षा में आध्यात्मिकता पर विशेष बल दिया जाता था, लेकिन अब यह भौतिकता पर केन्द्रित हो गई है। शिक्षार्थियों का सर्वांगीण विकास सुयोग्य, सच्चरित्र, सात्विक वृत्ति के शिक्षकों के माध्यम से ही सम्भव था। उन शिक्षकों के मूल में सांस्कृतिक आध्यामिक चेतना का दीपक प्रज्वलित था। फलस्वरूप समाज में शिक्षक का चयन, उसके व्यवहार की प्रभावशीलता तथा समाज के विकास में उसके कार्यों की भूमिका विशिष्ट मिशाल के रूप में होती थी। शिक्षक वृत्ति को आराध्य एवं पवित्र माना जाता था तथा

''शिक्षक'' एक ऐसे दीपक की ज्योति के समान है जो स्वयं चलकर दूसरो को प्रकाशमान करता हुआ अधंकार को दूर करता है ज्ञानरुपी उजाला जो कि मानवता के मार्ग का प्रकाशमान करता है व अज्ञानरुपी अधंकार को दरू करता है। इसलिये उसके नैतिक कर्तव्य व इन कर्तव्यो में उसकी निष्ठा ही उसे शिक्षक होने का गौरव प्रदान करती है। शिक्षक का व्यवहार उदार, सच्चरित्र, सहयोगी, सहिष्णु व दयालु होता है यदि अध्यापक में इन गुणों का अभाव होता है तो वह उस गौरव के योग्य नही रह पाता अतः अध्यापक को सदैव अपना आचरण श्रेष्ठ रखना चाहिये।

डॉ. राधाकृष्णन के अनुसार, ''समाज में अध्यापक का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण है वह एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी की परम्पराएं एवं तकनीकी कौशल पहुँचाने का केन्द्र है और सभ्यता के प्रकाश को प्रज्जवलित रखने में सहायता देता है। शिक्षक के व्यक्तित्व का बालकों के ऊपर अमिट प्रभाव पड़ता है।''

1.2 अध्यापन अभिवृत्ति –

अभिवृत्ति (Aptitude) से आशय निश्चित प्रकार के कार्य को कर सकने की क्षमता (Competency) से है। इसे ''योग्यता'' (talent) माना जा सकता है। अभिक्षमता, शारीरिक और मानसिक दोनों तरह की हो सकती है। लेकिन बढ़ा हुआ ज्ञान–स्तर, समझ, सीखे हुए कौशल या अभिवृत्ति आदि अभिवृत्ति के अन्तर्गत नहीं आते। अभिक्षमता, ''जन्मजात प्रकृति'' की है, न कि कुछ प्राप्त की गयी या सीखी गयी चीज। अभिवृत्ति (Aptitude)– ऐसी विशेषताओं का संयोग जो व्यक्ति की शिक्षण द्वारा कुछ विशिष्ट कौशलों को अर्जित करने की समर्थता का सूचक होता है। अभिवृत्ति परीक्षण (Aptitude tests) – व्यक्ति के भावी निष्पादन की क्षमता का मापन करने वाले परीक्षण। अध्यापन की परिभाषाएं– अध्यापन का कार्य प्राचीन काल से औपचारिक अथवा अनौपचारिक किसी न किसी रूप में होता आ रहा है। अध्यापन शब्द शिक्षण से बना है। जिसका अर्थ है 'ज्ञान प्रदान करना।' अध्यापन का अंग्रेजी रूपान्तर टीचिंग है। इस शब्द का प्रयोग सीखना, पढ़ाना, अध्यापन कार्य अथवा ज्ञान प्रदान करने से लिया जाता है। इस प्रकार अध्यापन का तात्पर्य है ''किसी व्यक्ति को कोई बात सिखाना अथवा कोई ज्ञान प्रदान करना।''

स्मिथ के अनुसार, ''अध्यापन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसका सम्पादन अंतः पारस्परिक सम्बन्धों के माध्यम से अधिगम को बढ़ाना होता है।'' अभिवृत्ति (अभियोग्यता) का अर्थ अभिवृत्ति किसी एक क्षेत्र या समूह में व्यक्ति की कार्य कुशलता की विशिष्ट योग्यता या विशिष्ट क्षमता है। अभिवृत्ति की परिभाषा के सम्बन्ध में मनोवैज्ञानिकों में एकमत नहीं है। फिर भी इस सम्बन्ध में दो प्रमुख विचार धाराएं प्रचलित हैं। एक विचारधारा के अनुसार अभिवृत्ति जन्मजात अर्जित है, जबकि दूसरी विचारधारा के दृष्टिकोण में अभिवृत्ति एक गुण है या बहुत से गुणों का सम्मिलित प्रभाव है। विभिन्न गुणों के मिश्रणों की आवश्यकता होती है। एक अभिवृत्ति हेतु ये गुण एक प्रकार से मिश्रित होते हैं तो अन्य प्रकार की अभिवृत्ति के लिये ये गुण अन्य प्रकार से सम्बन्धित होते हैं। फ्रीमैन के अनुसार, ''अभियोग्यता एक स्थिति या विशेषताओं का समूह है जो इंगित करता है कि व्यक्ति किसी विशेष ज्ञान, योग्यता या प्रतिक्रियाओं के समूह जैसे भाषा बोलने की योग्यता, संगीतज्ञ बनने में यांत्रिक कार्य करने की योग्यता का विकास करता है।'' टैक्सल ने के कथनानुसार, ''अभियोग्यता वर्तमान दशा है जो व्यक्ति की भविष्य की क्षमताओं की ओर संकेत करती है।'' वारेन के अनुसार, ''अभियोग्यता वह दशा या गुणों का रूप है जो व्यक्ति को कम योग्यता की ओर संकेत करती है जो प्रशिक्षण के बाद ज्ञान, दक्षता या प्रतिक्रियाओं को सिखाता है।'' विद्यम की मान्यता है कि, ''अभिवृत्ति एक बीजन्तु योग्यता है।

अभिवृत्ति की विशेषताएं –विद्यम के अनुसार अभिवृत्ति की पांच प्रमुख विशेषताएं हैं–

(1) अभिवृत्ति की रूचि, योग्यता एवं सन्तुष्टि में घनिष्ट सम्बन्ध होता है।

(2) यह व्यक्ति की जन्मजात योग्यता ही नहीं होती, बल्कि किसी कार्य को करने में उसके संयुक्त भाव को व्यक्त करती है।

(3) यह किसी वस्तु का नाम न होकर अमूर्त सत्ता है।

(4) किसी व्यक्ति की अभिवृत्ति वर्तमान गुणों का वह समुच्चय है जो उसकी भविष्य की क्षमताओं की ओर इंगित करती है।

(5) वर्तमान वस्तु–स्थिति होने पर भी अभिवृत्ति का निर्देश भविष्य की ओर होता है। यह क्षमताओं की प्रतीक होती है।

1.3 व्यावसायिक मूल्य– व्यवसाय (Job) एक ऐसे धंधे से है, जिसमें व्यक्ति नियमित रूप से दूसरों के लिए कार्य करता है और उसके बदले में वेतन अथवा मजदूरी प्राप्त करता है। सरकारी कर्मचारी, कंपनियों के कार्यकारी, अधिकारी, बैंक कर्मचारी, मजदूर आदि नौकरी में संलग्न माने जाते हैं। नौकरी में काम के घंटे, मजदूरी या वेतन की राशि तथा अन्य सुविधाएँ आदि के संबंध में शर्तें होती है। सामान्यतः नियोक्ता इन शर्तों को तय करता है। कोई भी व्यक्ति जो नौकरी चाहता है, उसे तभी कार्य करना आरम्भ करना चाहिए जबकि वह शर्तों से संतुष्ट हो। कर्मचारी का प्रतिफल निश्चित होता है तथा उसका भुगतान मजदूरी अथवा वेतन के रूप में किया जाता है। व्यावसायिक संतुष्टि का अर्थ व परिभाषाएं–व्यावसायिक संतुष्टि से तात्पर्य है कि व्यक्ति जिस व्यवसाय में है उसके प्रति उसका दृष्टिकोण क्या है? उसने जो कार्य चुना है, उसके प्रति वह पूर्ण रूपेण निष्ठ एवं संतुष्ट है। अध्यापक ने अध्यापन कार्य अर्थात पढ़ाने का जो कार्य चुना है, वह उस व्यवसाय से संतुष्ट है तथा वह वर्तमान दशा में प्रसन्न है। सिन्हा डी., शर्मा के. सी. के अनुसार – व्यावसायिक संतुष्टि का संबंध व्यक्ति की नौकरी से है तथा समाज में व नौकरी में सामान्य तालमेल से भी काम का संबंध है। सय्यद, के.जी. के अनुसार – अध्यापन आज भी अनाकर्षक व्यवसाय है जिसे अधिकतर लोग अन्तिम व्यवसाय के रूप में स्वीकार करते हैं। ब्लूम के अनुसार – किसी संगठन की प्रभावशीलता की महत्वपूर्ण कसौटी संतुष्टि है अपने व्यवसाय के प्रति संतुष्टि या असंतुष्टि व व्यक्ति के अपने परिकल्पित लक्ष्यों की प्राप्ति, सफलता या असफलता, सकारात्मक या नकारात्मक मूल्यांकन पर निर्भर करती है।

अभिवृत्ति व मूल्य दोनो ही तत्व वस्तु व व्यक्ति के आपस में सम्बधो को निरूपण करने वाले मानसिक तत्व है। फिर भी दोनो को एक दूसरे अलग माना जाता है मूल्य वस्तुगत होते है वही मनोभाव आत्मगत होते है। दूसरे शब्दो मूल्य से वस्तु का महत्त्व अधिक हो जाता है। मनोभाव कोई भी वस्तु की तरफ ईशारा करने वाली प्रवृत्ति का नाम है जबकि वही मनोभाव आगे जाकर व्यक्ति के लक्ष्यों का रूप धारण कर लेते है तो वह मूल्य के नाम से जाने जाते है। मनोभाव मूल्यों पर आधारित होते है। मूल्यों को हम प्रत्यक्ष रूप से माप नही सकते है जबकि मनोभावों मापने के लिये वैज्ञानिको ने अनेक विधियों का निर्माण किया है जिससे मनोभावों का मापन सम्भव हो जाता है। अभिवृत्ति मानव की प्रतिक्रिया को सदैव दो विमाओं की ओर ईशारा करती है जैसे – स्वीकृत–अस्वीकृत, सुखान्त–दुःखान्त, प्रतिकूल –अनुकूल, नकारात्मक–सकारात्मक आदि।

बालकों में मूल्यों के समावेश हेतु गुरूजनों को अपना आचरण अथवा व्यवहार इस प्रकार रखना चाहिए कि बालक उसका अनुकरण कर श्रेष्ठ मानव बन सके गुरू के उपदेशों से अधिक प्रभाव उसके आचरण का होता है। स्वामी विवेकानन्द के अनुसार, शिक्षक छात्रों के स्तर पर आकर उन्हें समझने का प्रयत्न करता है और इस प्रकार वह छात्रों को अच्छे संस्कार दे पाता है। अध्यापक केवल उपदेशों और प्रवचनों द्वारा मूल्य शिक्षा प्रदान करके अपने छात्रों का चरित्र निर्माण नहीं कर सकता। छात्र तो उसके दैनिक व्यवहार और आचरण को देखते हैं छात्रों में अनुकरण की प्रवृत्ति अत्यधिक प्रबल होती है। अध्यापक का बोलना, उसका उच्चारण, भाषा शैली, वेशभूषा, चाल–ढ़ाल आदि सभी का वे अनुकरण करते हैं यदि शिक्षक सावधान नही है तो बच्चे उसकी त्रुटियों का अनुकरण कर शीघ्र ग्रहण कर सकते हैं और स्वयं हास्यास्पद होकर शिक्षक को भी हास्यास्पद बना देते हैं। अध्यापक में किसी प्रकार का व्यसन नहीं होना चाहिए।

1.3 समस्या कथन –

"उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण–अभिवृत्ति एवं व्यावसायिक मूल्यों का अध्ययन"

1.4 अध्ययन में प्रस्तुत तकनीकी शब्दों की व्याख्या –

उच्च माध्यमिक विद्यालय :–

उच्च माध्यमिक विद्यालय से तात्पर्य राजस्थान राज्य में स्थित वह सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों से है जिनमे कक्षा नवीं से कक्षा बारहवीं तक की कक्षाएँ संचालित होती है तथा जो माध्यमिक शिक्षा बोर्ड़, राजस्थान से सम्बध्द्ता प्राप्त हैं।

शिक्षक :–

शिक्षकों से हमारा यह अभिप्राय है कि वर्तमान समय में कक्षा पहली से कक्षा बारहवीं तक सरकारी विद्यालयों व गैर सरकारी विद्यालयों में जिनको की हम निजी विद्यालय के नाम से भी पुकारते है। नर्सरी से कक्षा बारहवीं तक विभिन्न पाठ्य पुस्तकों के माध्यम से सुचारु रुप से शिक्षण कार्य करवाता है एक श्रेष्ठ शिक्षक वह होता है जो विभिन्न स्त्रोतों के माध्यम से अध्यापन कार्य करवाता है।

शिक्षण–अभिवृत्ति

किसी भी मनुष्य के किसी घटना, वस्तु के प्रति उसका दृष्टिकोण, उस व्यक्ति के विचार आदि का आश्य अभिवृत्ति से है। यह सभी दृष्टिकोण ही उसके विचार, व्यक्ति, वस्तुओं व घटनाओ के प्रति उनके व्यवहारों को एक सही दिशा देता है। एक मनोभाव ही ऐसा है जो मनुष्य को किसी भी व्यक्ति, वस्तु व पदार्थ के विपक्ष में व पक्ष में करती है

व्यावसायिक मूल्यः–

मूल्य का शाब्दिक अर्थ है उपयोगिता, महत्व एवं वांछनीयता। अंग्रेजी भाषा में Value की उत्पत्ति लेटिन शब्द Valere से हुई जिसे उपयोगिता तथा महत्व के अर्थ में माना जाता है। व्यावसायिक मूल्य से तात्पर्य शिक्षकों के अपने व्यावसाय/पेशे के प्रति नैतिक मूल्यों से है।

1.5 शून्य परिकल्पना

शोधकर्त्री ने अनुसंधान के निर्धारित उद्देश्यों के प्राप्ति के लिए निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाओं का निमार्ण किया हैं :–

1. राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के कला संकाय के पुरूष व महिला शिक्षकों की शिक्षण अभिवृति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के कला संकाय के पुरूष व महिला शिक्षकों की शिक्षण अभिवृति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. राजकीय एवं निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के कला संकाय शिक्षकों की शिक्षण अभिवृति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
4. राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के कला संकाय के पुरूष व महिला शिक्षकों के व्यावसायिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
5. निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के कला संकाय के पुरूष व महिला शिक्षकों के व्यावसायिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
6. राजकीय एवं निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के कला संकाय शिक्षकों के व्यावसायिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

1.6 प्रस्तुत अध्ययन का परिसीमन :–

प्रस्तुत शोध में श्री गंगानगर व हनुमानगढ जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के कुल 600 शिक्षकों को शोध अध्ययन में न्यादर्श के रूप में सम्मिलित किया गया है। शोधकर्त्री द्वारा शोधकार्य हेतु सम्पूर्ण जनसंख्या में से चयनित ईकाइयाँ, जो सम्पूर्ण समूह का प्रतिनिधित्व करें, व्यवहार परख शोध में न्यादर्श या प्रतिदर्श कहलाती है।

1. प्रस्तुत शोध कार्य में राजस्थान राज्य के श्रीगंगानगर एवं हनुमानगढ़ जिले के राजकीय एवं निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों को सम्मिलित किया जायेगा।
2. इस शोध को राजस्थान राज्य के श्रीगंगानगर एवं हनुमानगढ़ जिले तक ही सीमित रखा जायेगा।
3. प्रस्तुत शोध कार्य में राजस्थान राज्य के श्रीगंगानगर एवं हनुमानगढ़ जिले के राजकीय एवं निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के कुल 600 शिक्षकों को सम्मिलित किया जायेगा।
4. प्रस्तुत शोध कार्य में राजस्थान राज्य के श्रीगंगानगर व हनुमानगढ़ जिले के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के 300 शिक्षकों व निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के 300 शिक्षकों को सम्मिलित किया जायेगा।

परिणाम –

परिकल्पना – 1 राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के कला संकाय के पुरूष व महिला शिक्षकों की शिक्षण अभिवृति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के कला संकाय के पुरूष व महिला शिक्षकों की शिक्षण अभिवृति के आधार पर प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 53.08 व 54.36 है और मानक विचलन 4.74 व 6.0 है तथा क्रान्तिक अनुपात 1.18 है, जो स्वतन्त्रता की कोटि 98 के आधार पर सारणी के स्तर 0.05 के मान 1.66 से कम है, जिससे स्पष्ट होता है कि राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के कला संकाय के पुरूष व महिला शिक्षकों की शिक्षण अभिवृति में कोई सार्थक नही अन्तर है।

अतः शून्य परिकल्पना ''राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के कला संकाय के पुरूष व महिला शिक्षकों की शिक्षण अभिवृति में कोई सार्थक नही अन्तर है'', स्वीकृत होती है।

परिकल्पना – 2 निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के कला संकाय के पुरूष व महिला शिक्षकों की शिक्षण अभिवृति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के कला संकाय के पुरूष व महिला शिक्षकों की शिक्षण अभिवृति के आधार पर प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 60.36 व 57.54 है और मानक विचलन 8.97 व 9.38 है तथा क्रान्तिक अनुपात 1.53 है, जो स्वतन्त्रता की कोटि 98 के आधार पर सारणी के स्तर 0.05 के मान 1.66 से कम है, जिससे स्पष्ट होता है कि निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के कला संकाय के पुरूष व महिला शिक्षकों की शिक्षण अभिवृति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अतः शून्य परिकल्पना '' निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के कला संकाय के पुरूष व महिला शिक्षकों की शिक्षण अभिवृति में कोई सार्थक नही अन्तर है'', स्वीकृत होती है।

परिकल्पना – 3 राजकीय एवं निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के कला संकाय शिक्षकों की शिक्षण अभिवृति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

राजकीय एवं निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के कला संकाय शिक्षकों की शिक्षण अभिवृति के आधार पर प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 53.72 व 58.95 है और मानक विचलन 5.44 व 9.29 है तथा क्रान्तिक अनुपात 4.85 है, जो स्वतन्त्रता की कोटि 198 के आधार पर सारणी के स्तर 0.05 के मान 1.65 से अधिक है, जिससे स्पष्ट होता है कि राजकीय एवं निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के कला संकाय शिक्षकों की शिक्षण अभिवृति में सार्थक अन्तर है।

अतः शून्य परिकल्पना कि '' राजकीय एवं निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के कला संकाय शिक्षकों की शिक्षण अभिवृति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। '' अस्वीकृत होती है।

परिकल्पना – 4 राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के कला संकाय के पुरूष व महिला शिक्षकों के व्यावसायिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के कला संकाय के पुरूष व महिला शिक्षकों के व्यावसायिक मूल्यों के आधार पर प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 58.74 व 54.36 है और मानक विचलन 9.42 व 6.0 है तथा क्रान्तिक अनुपात 2.77 है, जो स्वतन्त्रता की कोटि 98 के आधार पर सारणी के स्तर 0.05 के मान 1.66 से अधिक है, जिससे स्पष्ट होता है कि राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के कला संकाय के पुरूष व महिला शिक्षकों के व्यावसायिक मूल्यों में सार्थक अन्तर है।

अतः शून्य परिकल्पना ''राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के कला संकाय के पुरूष व महिला शिक्षकों के व्यावसायिक मूल्यों में कोई सार्थक नही अन्तर है'', अस्वीकृत होती है।

परिकल्पना – 5 निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के कला संकाय के पुरूष व महिला शिक्षकों के व्यावसायिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के कला संकाय के पुरूष व महिला शिक्षकों के व्यावसायिक मूल्यों के आधार पर प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 61.4 व 57.54 है और मानक विचलन 8.72 व 9.38 है तथा क्रान्तिक अनुपात 2.13 है, जो स्वतन्त्रता की कोटि 98 के आधार पर सारणी के स्तर 0.05 के मान 1.66 से अधिक है, जिससे स्पष्ट होता है कि निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के कला संकाय के पुरूष व महिला शिक्षकों के व्यावसायिक मूल्यों में सार्थक अन्तर है।

अतः शून्य परिकल्पना '' निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के कला संकाय के पुरूष व महिला शिक्षकों के व्यावसायिक मूल्यों में कोई सार्थक नही अन्तर है'', अस्वीकृत होती है।

परिकल्पना – 6 राजकीय एवं निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के कला संकाय शिक्षकों के व्यावसायिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

राजकीय एवं निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के कला संकाय शिक्षकों के व्यावसायिक मूल्यों के आधार पर प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 56.55 व 59.47 है और मानक विचलन 8.24 व 9.30 है तथा क्रान्तिक अनुपात 2.35 है, जो स्वतन्त्रता की कोटि 198 के आधार पर सारणी के स्तर 0.05 के मान 1.65 से अधिक है, जिससे स्पष्ट होता है कि राजकीय एवं निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के कला संकाय शिक्षकों के व्यावसायिक मूल्यों में सार्थक अन्तर है।

अतः शून्य परिकल्पना कि '' राजकीय एवं निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के कला संकाय शिक्षकों के व्यावसायिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। '' अस्वीकृत होती है।

प्रस्तुत शोध कार्य उच्च माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों की अध्यापन अभिवृत्ति व व्यावसायिक मूल्यों पर आधारित है। राजकीय माध्यमिक विद्यालय व निजी माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों की अध्यापन अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर पाया है। लेकिन पुरुष व महिला अध्यापकों के व्यावसायिक मूल्यों अलग अलग है। इस शोध कार्य के परिणाम इस तथ्य की ओर इंगित करते हैं कि तुलनात्मक दृष्टि से अधिकांश परिस्थितियों में सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के चाहे पुरुष अध्यापक हों या महिला अध्यापिकाओं उनकी अध्यापन अभिवृत्ति व व्यावसायिक मूल्यों निजी माध्यमिक विद्यालय के पुरुष और महिला अध्यापिकाओं के समान पायी है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

हिन्दी पुस्तकें :–

1. अस्थाना, डॉ. विपिन (1994) : ''मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन'', विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा–2 उ. प्र. पृष्ठ संख्या–170
2. चौहान, एस. एस. (1991) : ''उच्च शिक्षा मनोविज्ञान'', विकास पब्लिशिग हाऊस, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या–4051
3. गुप्त, नत्थूलाल (2000) : ''मूल्य परक शिक्षा और समाज'', नमन प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या–122
4. जायसवाल, सीताराम़ (1994) : ''शिक्षा मनोविज्ञान'', आर्य बुक डिपो, करोल बाग, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 221

English Books

1. Best, J.W. (1981). *Research in Education*, New Delhi: Prentice Hall of India Pvt. Ltd.
2. Bhattacharya, M., Dutta, A. K. & Mandal, M. K. (2004). Factor Structure of Emotional Intelligence in India. *Psychological Studies*, 2 (49).
3. Sjoberg, L., & Engelberg, E. (2003). *Measuring and validating emotional intelligence as performance or self-report.*
4. Raj, V. K. (1995). *Professional Education and Teachers Training*. Allahabad: Chugh Publications.

पत्र–पत्रिकाएँ :–

- सिंह, डी.पी. (2003) : ''शिक्षा में मूल्य प्रशिक्षण'', शिविरा पत्रिका, माध्यमिक शिक्षा निदेशालय
- लोकमान्य शिक्षक संयुक्तांक (1991) : शिक्षा की संयुक्त पत्रिका, पृष्ठ संख्या–38
- पर्सपेक्टिव इन साइकोलॉजिकल रिसचेज, पृष्ठ संख्या – 22–23
- मेनारिया, श्रीमती सरिता (2000) : ''शिक्षा का नैतिकता पर प्रभाव'', राजस्थान बोर्ड शिक्षण, पत्रिका खण्ड 40–45, पृष्ठ संख्या–15